भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून में राजभाषा हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला

आज दिनांक 10 मई 2012 को भरतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् सभागार में राजभाषा हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। डॉ. भगवान दास पटेरिया, उपाध्यक्ष, केंद्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली तथा श्री सु.प्र. चौबे, निदेशक (राजभाषा), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली इस प्रशिक्षण कार्यशाला के प्रमुख वक्ता थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलित कर किया गया। श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा आशा व्यक्त की, कि यह कार्यशाला सभी सहभागियों के लिए अत्यंत लाभदायक होगी। कार्यक्रम का संचालन श्री आर. पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार) ने किया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने कहा कि हिन्दी का विकास निरंतर हो रहा है और हमे हिन्दी के प्रति सकरात्मक सोच रखते हुए हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए प्रयास करना चाहिए। हमें निरंतर मनन करना चाहिए कि हिन्दी को कैसे आगे बढ़ाया जाए? क्योंकि राजभाषा हिन्दी ही हमें गौरव तथा सम्मान प्रदान करती है, एक अच्छा तथा महान व्यक्ति बनने में सहायता करती है। हिन्दी एक ऐसा माध्यम है जो सारे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधती है। हिन्दी की सम्प्रेषणीयता पर बात करते हुए उन्होने कहा कि महात्मा गांधी जैसे महान व्यक्ति ने गुजराती होते हुए भी स्वतंत्रता आंदोलन के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग किया क्योंकि वे जानते थे कि यह भाषा ही भारत के लोगों को एक कर सकती है। उन्होंने अनुरोध किया कि हम सभी को हिन्दी में बोलना, सोचना तथा लिखना चाहिए तभी हिन्दी का विकास हो सकता है।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. पी. पी. भोजवैद, निदेशक, वन अनुसधांन संस्थान, देहरादून ने कहा कि भारत विविधता में एकता वाला देश है, इसमें बहुत सारी भाषाएं हैं और हिन्दी सभी भाषाओं के साथ घुल मिल जाती है। उन्होंने कहा कि हम उसी स्थान पर प्रसन्न रह सकते हैं जहाँ हमारी स्वयं की भाषा बोली जाती है क्योंकि भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति एक दूसरे को समझ सकता है, इसलिए हमें अपनी राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए हर संभव प्रयत्न करना चाहिए।

श्री भगवान दास पटेरिया जी ने कहा कि हिन्दी के कार्यान्वयन को प्रेम तथा दृढ़ता से करना होगा क्योंकि जब हम कार्य को प्रेम तथा दृढ़ता से करते है तभी उसमें सफलता मिलती है, इसलिए हम सभी का दायित्व बनता है कि हम दृढ़ता से राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए प्रयास करें।

श्री सु.प्र. चौबे जी ने कहा कि भारत सरकार ने हमें ये उत्तरदायित्व दिया है कि हम सरकारी काम–काज में हिन्दी का प्रयोग करें। इसके लिए सरकार समय–समय पर निरीक्षण करती है तथा हिन्दी कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए प्रति वर्ष वार्षिक कार्यक्रम बनाती है ताकि हमें हिन्दी के कार्यान्वयन में सहायता मिले।

इस कार्यक्रम में श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा); श्री एस. पी. सिंह, उप महानिदेशक (प्रशासन); श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार); श्री संदीप त्रिपाठी, उप महानिदेशक (अनुसंधान) तथा डॉ. एन. एस. बिष्ट, निदेशक (परियोजना एवं अंर्तराष्ट्रीय सहयोग) सहित समस्त उच्च अधिकारी, वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्मी तथा लिपिकीय संवर्ग के समस्त कर्मी सहित लगभग 300 व्यक्तियों ने भाग लिया।

अंत में श्री आर. पी. सिंह, सहायक महानिदेशक, (मीडिया एवं विस्तार) ने सभी अतिथियों तथा सहभागियों का इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए धन्यवाद लिया।

Rajbhasha Hindi Training Workshop organized at ICFRE, Dehradun

A Training Workshop on Rajbhasha Hindi was organized on 10th May 2012 at ICFRE Auditorium. Dr. V.K. Bahuguna was the chief guest in the function. Dr. B.D. Pateriya, Deputy Chairman, Kendriya Sachivalya Hindi Parishad and Shri S.P. Choubey, Director (Rajbhasha), Ministry of Environment and Forests were the main resource persons in the Workshop. The programme started with lighting of lamp. Shri Saibal Dasgupta, DDG (Extension) formally welcomed all the participants and expressed hope that the workshop would benefit them all. Shri R.P. Singh, ADG (Media and Extension) compeered the whole programme.

Addressing the workshop, Dr. V.K. Bahuguna said that Hindi is developing continuously and we need to implement Hindi with a positive attitude. We should continuously explore the ways how to take Hindi forward because Hindi gives us pride and respect and helps us in becoming a good person. Hindi is a medium that connects the entire country. Talking about communicative power of Hindi, he further said that a great person like Mahatma Gandhi opted for Hindi for freedom moment despite being a Gujarati because he knew that this is the language which can unite the people of India. He appealed to all to use Hindi in writing, thinking and mutual interaction to ensure development of Hindi.

Speaking on the occasion, Dr. P.P Bhojvaid, Director, FRI said that India is a country of unity and diversity. It has many languages and Hindi can mix up with all the languages. He further added that we can remain happy only at a place where our own language is used because through the medium of language alone, a person can understand another person and therefore, we should put in every effort for expansion of Hindi.

Dr. B.D. Pateriya said that Hindi has to be implemented with love but firmly because we can get success only when we do something with love and firmness. Therefore, it is the duty of all of us to work with love and firmness for progress of Hindi.

Shri S.P. Choubey said on the occasion that government of India has given us the responsibility to implement Hindi in official works. For this government conducts periodic inspections and prepares Annual programme for implementation of Hindi to facilitate its use.

On this occasion, Shri Omkar Singh, DDG (Education), Shri S.P. Singh, DDG (Administration), Shri Saibal Dasgupta, DDG (Extension), Shri Sandeep Tripathi, DDG (Research) and Dr. N.S. Bisht, Director (P&IC) and all other senior officers, scientists and ministerial staff were present.

The workshop ended with vote of thanks from Shri R.P. Singh, ADG (Media and Extension).

हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला में सहभागियों को संबोधित करते हुए डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून